ज़माना बदल गया

चंदा के एक के बाद एक चार बेटियां हुईं। बेटा न जनने के कारण उसे सास के ताने सुनने पड़ते। अपनी देवरानी के बेटे का लाड़ देखकर उसे बुरा तो नहीं लगता था। पर उसका मन करता था उसकी बेटियों का भी वैसे ही लाड़-प्यार हो। सास के तानों के डर से वह चाहते हुए भी ज़्यादा कुछ नहीं कर पाती थी। बड़ी बेटी कृष्णा बुद्धिमान भी थी और चंदा को बहुत प्यारी भी थी। वह उसे बेटे के समान पढ़ाना लिखाना चाहती थी।

चंदा की छोटी बेटी कुछ कमज़ोर पैदा हुई थी। विशेष ध्यान न देने के कारण दिन पर दिन और सूखती गई और भगवान को प्यारी हो गई। चंदा के मन में बड़ा डर बैठ गया। शायद सास के कोसने के कारण ही ऐसा हुआ। उसने कृष्णा को अपने भाई के पास भेज दिया। वह वहीं रह कर पढ़ी-लिखी, बड़ी हुई।

साल पर साल बीतते गए। चंदा की सास बूढ़ी हो गई। वह काफी बीमार भी रहने लगी। एक दिन चंदा ज़बरन सास को डाक्टरनी के पास दिखाने ले गई। कुछ दिनों से वह डाक्टरनी इसी शहर में आ गई थी और सभी उसका गुणगान करते थे। बुढ़िया बार-बार डाक्टरनी का मुंह देखती। जब उससे न रहा गया तो हिम्मत करके बोली, "बेटी, तुझे देखकर बड़ी ममता लगती है। मेरी बेटी कृष्णा भी बिलकुल तुम्हारी तरह थी। अब वह इतनी ही बड़ी हो गई होगी।"

डाक्टरनी ने मुस्करा कर कहा—"देख कर क्या करोगी दादी। अगर सचमुच ममता होती तो क्या इतने बरस बिना देखे रह सकती थीं। बेटी तो भार होती है।"

बुढ़िया ठंडी सांस भर कर बोली—"हां, बेटी तो भार होती है, पर ममता तो हमारे दिल में उनके लिए भी होती है। पर मेरी बेटी के ऐसे भाग्य कहां? वह तुम्हारी तरह डाक्टरनी तो नहीं बन सकती।"

डाक्टरनी ने कहा, "क्यों नहीं बन सकती। अगर तुम उसे भी बेटे के समान पढ़ाओ-लिखाओ तो वह भी बेटे जैसी बन सकती है।"

बुढ़िया—"नहीं बेटी, पुरखों के ज़माने से ऐसा ही होता आया है। बेटी को पढ़ाने, नौकरी कराने से नाक कट जाएगी।"

डाक्टरनी—"दादी, तुम कैसी बातें करती हो। गुण सीखने से कहीं नाक कटती है। गरीब, बीमार लोगों की सेवा करना क्या पाप है?"

बुढ़िया का गला भर आया—"नहीं बेटी, ऐसा मत बोलो। सारा गांव तुम्हें देवी कहता है। मैंने सदा बेटी-बेटे में भेद किया। मेरी बेटी कृष्णा भी आज डाक्टरनी बन सकती थी। अब लगता है मैं उसे बिना देखे ही मर जाऊंगी।"

डाक्टरनी—"नहीं दादी, ऐसा मत कहो। अगर तुम्हारी कृष्णा ही तुम्हें बचा ले तो?"

दादी आंखे फाड़ कर उसे देख रही थी। हे भगवान, यह कैसा सपना है? कृष्णा प्यार से दादी से लिपट गई। दादी की आंखों से आंसू बहने लगे।

कृष्णा ने कहा—"दादी, तुम्हें तो खुश होना चाहिए। तुम रो क्यों रही हो?"

दादी ने कहा—"बेटी, यह पछतावे के आंसू हैं और खुशी के भी। मेरी ही आंखों के सामने ज़माना कितना बदल गया। मैं देख रही हूं बेटी भी वही सब कुछ कर सकती है जो बेटा करता है।" दादी का गला रुंध गया और वह आगे बोल नहीं सकीं।

साभार—शकुंतला सरन, साक्षरता निकेतन, लखनऊ